ISSN-2230-7540

मुगल बादशाह अकबर का कला, संस्कृति एवं हिन्दू धर्म पर प्रभाव

Dr. Narendra Kumar Sharma*

Lecturer, Department of History,
Babu Shobha Ram Government Arts College,
Alwar, Rajasthan

शोध संक्षेप

अकबर का जन्म पूर्णिमा के दिन हुआ था, इसलिए उनका नाम बदरुद्दीन मोहम्मद अकबर रखा गया। बद्र का अर्थ है पूर्ण चंद्रमा और अकबर अपने नाना शेख अली अकबर जामी से उत्पन्न हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि काबुल को जीतने के बाद, उनके पिता हुमायूँ ने बुरी नज़र से बचने के लिए अकबर की जन्मतिथि और नाम बदल दिया। यह भी किंवदंती है कि भारत के लोगों ने उनके सफल और कुशल शासन के लिए उन्हें अकबर नाम से सम्मानित किया। था। अरबी में, अकबर शब्द का अर्थ "महान" या बड़ा है। अकबर को कबूतर बाजी, घुड़सवारी और कुत्ते पालने में दिलचस्पी थी, लेकिन वह हमेशा ज्ञान अर्जित करने में रुचि रखता था। कहा जाता है कि जब वह सोने जाता था, तो एक व्यक्ति उसे कुछ पढ़ता था। समय के साथ, अकबर एक परिपक्व और बुद्धिमान शासक के रूप में उभरा, जिसकी कला, वास्तुकला, संगीत और साहित्य में गहरी दिलचस्पी थी।

प्रमुख शब्द:- *प्रारम्भिक जीवन, राजतिलक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक विकास, हिन्दू धर्म पर प्रभाव*

उद्देश्य:

1. अकबर के शासन काल में कला एवं संस्कृति की जानकारी प्रदान करना।
2. अकबर के समय में हिन्दू धर्म की स्थिति का पता लगाना।
3. अकबर की नीतियों का धर्म एवं समाज पर प्रभावों को बताना।

परिकल्पना

1. अकबर के समय में कला एवं संस्कृति का विकास हुआ।
2. अकबर के शासन के हिन्दू समाज पर सकारात्मक प्रभाव देखे जाते हैं।

ISSN-2230-7540

शोध विधितन्त्र

इस शोध के अध्ययन में ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति को अपनाया गया है। यह शोध ऐतिहासिक उपागम पर आधारित है। इस लेख में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ो को साक्षात्कार, व्यकिगत पत्र, समाचार पत्र, अभिलेख एवं विभन्न इतिहास के स्रोतों प्राप्त किया गया है ।

प्रारंभिक जीवन:

अकबर का जन्म राजकोट के शासक राणा अमरसाल के महल उमरकोट, सिंध (वर्तमान पाकिस्तान) में *23* नवंबर, *1582* को हुआ था (रजब, हिजरी के अनुसार, *'97* के चैथे दिन)। यहां सम्राट हुमायूँ अपनी हालिया शादी बेगम हमीदा बानो बेगम के साथ शरण ले रहा था। हुमायूँ ने एक बार सपने में इस बेटे का नाम रखा, जिसके अनुसार उसका नाम जलालुद्दीन मोहम्मद रखा गया। बाबर का राजवंश तैमूर और मंगोल नेता चंगेज खान से था, अर्थात उसके वंशज तैमूर लंग के कबीले से संबंधित थे और उसकी मां का पक्ष चंगेज खान से संबंधित था। इस प्रकार अकबर की धमनियां एशिया की दो सबसे प्रसिद्ध नस्लों तुर्क और मंगोलों के खून का मिश्रण थीं।

पश्तून नेता शेरशाह सूरी की वजह से हुमायूँ को फारस में अपना जीवन बिताने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन वह अकबर को अपने साथ नहीं ले गया, बल्कि उसे रीवा राज्य (वर्तमान मध्य प्रदेश) के एक गाँव मुकुंदपुर में छोड़ दिया। अकबर राजकुमार राम सिंह के साथ घनिष्ठ मित्र बन गया था, जो बाद में रीवा का राजा बन गया। वे एक साथ बड़े हुए और बढ़े और आजीवन मित्र बने रहे। बाद में, अकबर अपने चाचा मिर्जा अस्करी के साथ सफवी साम्राज्य (वर्तमान अफगानिस्तान का हिस्सा) में रहता था। वह पहले कुछ दिनों के लिए कंधार में रहे और फिर *1585* में काबुल में। हुमायूँ अपने छोटे भाइयों के लगभग बराबर रहा, इसलिए चाचा के साथ अकबर की स्थिति बंदी से कुछ बेहतर थी। हालाँकि, सभी उसके साथ अच्छे थे और शायद उससे बहुत प्यार करते थे। लेकिन अकबर पढ़-लिख नहीं सकता था, वह केवल सैन्य शिक्षा प्राप्त कर सकता था। उन्होंने शिकार, दौड़ और द्वंद्वयुद्ध, कुश्ती आदि में बहुत समय बिताया, और उन्हें शिक्षा में कोई दिलचस्पी नहीं थी। जब अकबर आठ वर्ष का था, तब से लेकर जन्म तक के उसके सभी वर्ष बड़ी अस्थिरता में चले गए थे, जिसके कारण उसकी शिक्षा और दीक्षा का प्रबंधन ठीक से नहीं हो पाया था। अब हुमायूँ का ध्यान भी इस ओर गया। उन्होंने अकबर की शिक्षा शुरू करने के लिए काबुल में एक कार्यक्रम आयोजित किया। लेकिन ऐन मौके पर, अकबर दूसरे दिन समारोह हार गया। मुल्ला जादा मुल्ला असमुद्दीन अब्राहम को अकबर का शिक्षक नियुक्त किया गया। लेकिन मुल्ला असमुद्दीन अक्षम साबित हुए। तब यह कार्य पहले मौलाना बामजीद को सौंपा गया था, लेकिन जब वह भी सफल नहीं हुआ, तो मौलाना अब्दुल कादिर को यह कार्य सौंपा गया। लेकिन कोई भी शिक्षक अकबर को शिक्षित करने में सफल नहीं हुआ। दरअसल, अकबर को पढ़ने-लिखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, उसे कबूतर बाजी, घुड़सवारी और कुत्ते पालने में ज्यादा दिलचस्पी थी। लेकिन वह हमेशा सीखने में रुचि रखते थे। कहा जाता है कि जब वह सोने जाता था, तो एक व्यक्ति उसे कुछ पढ़ता था। समय के साथ, अकबर एक परिपक्व और बुद्धिमान शासक के रूप में उभरा, जिसकी कला, वास्तुकला, संगीत और साहित्य में गहरी दिलचस्पी थी।

ISSN-2230-7540

राज तिलक:

हुमायूँ ने *1555* में शेरशाह सूरी के पुत्र इस्लाम शाह के उत्तराधिकार विवादों द्वारा पैदा की गई अराजकता का लाभ उठाकर दिल्ली को पुनः प्राप्त कर लिया। इसमें, उनकी सेना का एक अच्छा हिस्सा फारसी सहयोगी तहमास प्रथम था। कुछ महीने बाद, *6* साल की उम्र में, हुमायूँ की भारी पुस्तकालय में भारी नशे के नीचे गिरने से दुर्घटनावश मृत्यु हो गई। तब अकबर के संरक्षक बैरम खान ने इस मौत को कुछ समय तक साम्राज्य के हित में छिपाए रखा और अकबर को उत्तराधिकार के लिए तैयार किया। *14* फरवरी *1557* को अकबर की ताजपोशी हुई थी। यह सब मुगल साम्राज्य से दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार की वापसी के लिए सिकंदर शाह सूरी के साथ चल रहे युद्ध के दौरान हुआ था। *13* साल के अकबर को पंजाब के कलनौर में एक नए बने मंच पर सुनहरे कपड़ों और एक पगड़ी पहनाया गया। यह मंच आज भी बना हुआ है। उसे फारसी भाषा में सम्राट के लिये शब्द शहंशाह से पुकारा गया। वयस्क होने तक उसका राज्य बैरम खां के संरक्षण में चला।

सांस्कृतिक एवं कलात्मक विकास:

अकबर का शासन सांस्कृतिक और कलात्मक विकास के लिए भी उल्लेखनीय है। उनके समय में कई धार्मिक संप्रदाय विकसित हुए। महदी और रोशनिया संप्रदाय इस्लाम धर्म के तहत पनपे। पंजाब में सिख धर्म प्रभावशाली हो गया। अकबर सिख धर्म से प्रभावित था। उन्होंने अमृतसर की यात्रा की और स्वर्ण मंदिर के निर्माण के लिए भूमि प्रदान की। दादूदयाल का राजपूताना में एक अलग प्रभाव था। तुलसीदास और सूरदास ने क्रमशः रामभक्ति और कृष्णभक्ति का प्रचार किया। पारसी, ईसाई और हिंदू धर्म भी विकसित हुए, लेकिन अकबर की सुलह की नीति से सभी धर्मों में आपसी सामंजस्य बना। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। अकबर ने शिक्षा और साहित्य के विकास में व्यक्तिगत रुचि ली। वे स्वयं बहुत शिक्षित नहीं थे लेकिन उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए। उन्होंने विद्वानों और लेखकों को संरक्षण और प्रोत्साहित किया। उन्होंने तत्कालीन शिक्षा प्रणाली और पाठ्यक्रम में सुधार किए। नैतिक शिक्षा, गणित, कृषि, ज्यामिति, खगोल विज्ञान, तर्कशास्त्र, राजनीति विज्ञान और इतिहास की शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया। मदरसों को दिल्ली, फतेहपुर सीकरी, आगरा आदि में खोला गया। हिंदुओं के शैक्षणिक संस्थानों को भी प्रोत्साहन और संरक्षण दिया गया। तकनीकी और कलात्मक शिक्षा की भी व्यवस्था की गई थी। अकबर के समय में संस्कृत और फारसी के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास हुआ। बाबर द्वारा स्थापित शाही पुस्तकालय का विस्तार और संवर्धन किया गया था। अकबर ने एक अनुवाद विभाग भी स्थापित किया। इस विभाग ने संस्कृत, अरबी और अन्य भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तकों का फारसी, संस्कृत में अनुवाद तैयार किया। महाभारत, रामायण, पंचतंत्र, बाइबिल, कुरान आदि का अनुवाद किया गया। स्वतंत्र रूप से, कई धार्मिक, ऐतिहासिक ग्रंथों और कविताओं की रचना फ़ारसी, संस्कृत और स्थानीय भाषाओं में की गई थी। अबुल-फजल, फैजी, बदायुनी, अब्दुर्रहीम खानखाना आदि ने ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे। दीवान, मसनवी, रुबाइयाँ और ग़ज़ल भी लिखी गईं। कई ग्रंथों की रचना भी हिंदी और संस्कृत में की गई थी। सूरदास, तुलसीदास, रसखान ने भक्ति काव्य लिखा। मंग, नरहरी, महेश ठाकुर अन्य प्रसिद्ध विद्वान और अकबर के समय के लेखक थे। अकबर को कला का भी शौक था। उनके समय में वास्तुकला और पेंटिंग का विकास हुआ। अकबर को कई भव्य इमारतें मिलीं। उसने लाल पत्थरों से आगरा का एक शानदार किला बनवाया। लाहौर में एक सुंदर किला बनाया गया था। *1572* में, उन्होंने अपनी नई राजधानी फतेहपुर सीकरी का निर्माण कार्य शुरू किया। आठ वर्षों के भीतर, यह शहर सुंदर महलों और इमारतों से सुसज्जित हो गया। सीकरी के महल में एक कृत्रिम झील भी बनाई गई थी। सीकरी के किले की इमारतों में गुजराती, बंगाली, इस्लामी और राजपूत शैलियों का अद्भुत मिश्रण देखा जा सकता है। यहां की इमारतों में प्रमुख हैं इबादतखाना, पंचमहल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, जोधाबाई और बीरबल का महल और शीला सलीम चिश्ती की दरगाह। प्रसिद्ध बुलंद दरवाजा भी यहाँ बनाया गया था। अकबर ने दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा भी बनवाया। उन्होंने खुद सिकंदरा में अपना मकबरा बनाना शुरू किया, जिसे बाद में जहाँगीर ने पूरा किया। अकबर के समय में चित्रकला में भी प्रगति हुई। उनके दरबार के दो प्रसिद्ध चित्रकार थे जसवंत और दासवन। इस समय सुंदर भित्तिचित्र बनाए गए थे। पांडुलिपियों के किनारों को खींचने की कला भी विकसित हुई। पुर्तगाली पुजारियों ने अकबर के दरबार में यूरोपीय चित्रकला भी शुरू की। अकबर के समय के सबसे महान संगीतकार तानसेन थे जिन्होंने कई रागों की रचना की थी। अबुलफ़ज़ल के अनुसार, अकबर के दरबार में कई महिला-संगीतकार थीं।

ISSN-2230-7540

हिंदू धर्म पर प्रभाव:

हिंदुओं पर जज़िया *1582* में अकबर द्वारा हटा दिया गया था, लेकिन *1585* में मुस्लिम नेताओं के विरोध के कारण इसे वापस लेना पड़ा, हालांकि बाद में वह नीति से हट गए। ग़रीबी से मजबूर होकर ग़रीब हिंदुओं को इस्लाम में शरण लेने के लिए जज़िया कर लगाया गया था। यह मुस्लिम लोगों पर थोपा नहीं गया था। इस कर के कारण कई गरीब हिंदू आबादी बोझ हो गई थी, जिसके कारण वे इस्लाम में परिवर्तित हो गए थे। फिरोजशाह तुगलक ने वर्णन किया है कि जज़िया द्वारा इस्लाम कैसे फैलाया गया था ।

जज़िया और हिंदू तीर्थयात्रा पर कर हटाने के अकबर के सामयिक निर्णय का हिंदुओं पर बहुत कम प्रभाव पड़ा, क्योंकि इससे उन्हें बहुत लाभ नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें कुछ अंतराल के बाद वापस रखा गया था। अकबर ने अपनी इच्छा के विरुद्ध कई हिंदुओं को इस्लाम में परिवर्तित किया था, इसके अलावा, उन्होंने *1583* में प्रयागराज से इलाहाबाद जैसे कई हिंदू तीर्थ स्थानों के नाम भी परिवर्तित किए। यह अकबर के शासनकाल के दौरान उनके एक योद्धा हुसैन खान थे। तुकारिया ने हिंदुओं को अपने कंधे और हथियारों पर भेदभाव करने वाले दर्शकों को मजबूर करने के लिए मजबूर किया।

ज्वालामुखी मंदिर के बारे में एक किंवदंती है। यह *1572* से *1805* के बीच का होगा जब अकबर दिल्ली का राजा था। ध्यानी माता जोतवाली की परम भक्त थीं। एक बार वह देवी को देखने के लिए अपने ग्रामीणों के साथ ज्वालाजी के लिए निकला। जब उनका काफिला दिल्ली से गुजरा, तो मुगल सम्राट अकबर के सैनिकों ने उन्हें रोक दिया और उन्हें राजा अकबर के दरबार में पेश किया। जब अकबर ने ध्यानू से पूछा कि वह अपने गाँव वालों के साथ कहाँ जा रहा है, तो ध्यानू ने जवाब दिया कि वह जोतवाली आने वाला है। अकबर ने कहा कि तुम्हारी माँ में क्या ताकत है? और वह क्या कर सकती है? तब ध्यानू ने कहा कि वह पूरी दुनिया की रक्षा करने जा रहा है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो वह नहीं कर सकती। अकबर ने ध्यानु के घोड़े का सिर काट दिया और कहा कि अगर तुम्हारी माँ में शक्ति है, तो घोड़े के सिर को जोड़ो और उसे जीवित करो। यह शब्द सुनकर ध्यानु ने देवी की स्तुति शुरू कर दी और उसका सिर काट दिया और माँ को उपहार के रूप में अर्पित कर दिया। माँ की शक्ति से घोड़े का सिर जुड़ गया। इस प्रकार अकबर को देवी की शक्ति का एहसास हुआ। बादशाह अकबर ने देवी के मंदिर में सोने का छत्र भी चढ़ाया। लेकिन उनके दिमाग में कि वह एक सोने का छत्र लाया था, माता ने छत्र को अपने हाथ से गिरा दिया और इसे एक अजीब (नई) धातु का बना दिया जो आज तक एक रहस्य है। यह छतरी आज भी मंदिर में मौजूद है।

इतिहासकार दशरथ शर्मा का कहना है कि हम अकबर को उनके दरबार के इतिहास और आख्यानों जैसे अकबरनामा, आदि के अनुसार महान कहते हैं। यदि कोई अन्य उल्लेखनीय कार्यों जैसे कि दलपत विलास को देखता है, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि अकबर अपने हिंदू के साथ कितना अपमानजनक व्यवहार करता था। सामंत। अकबर की अनुमति के बाद अकबर के नवरत्न राजा मानसिंह द्वारा विश्वनाथ मंदिर के निर्माण के कारण हिंदुओं ने मंदिर का बहिष्कार किया। कारण स्पष्ट था कि राजा मानसिंह के परिवार के अकबर के साथ वैवाहिक संबंध थे। उनकी अनुमति के बिना अकबर की हिंदू सामंती मंदिर का निर्माण नहीं करवा सकी।

ISSN-2230-7540

जब राजा मानसिंह ने बिना अनुमति के बंगाल में एक मंदिर का निर्माण शुरू किया, तो अकबर ने पता चलने पर उसे रोक दिया और उसे *1595* में मस्जिद में बदलने का आदेश दिया।

निष्कर्ष:

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि अकबर का शासन सांस्कृतिक और कलात्मक विकास के लिए भी उल्लेखनीय रहा है। उनके समय में कई धार्मिक संप्रदाय विकसित हुए। महदी और रोशनिया संप्रदाय इस्लाम धर्म के तहत पनपे। बाद के वर्षों में, अकबर अन्य धर्मों की ओर भी आकर्षित हुआ। हिंदू धर्म में अकबर का लगाव न केवल मुगल साम्राज्य को मजबूत करना था, बल्कि हिंदू धर्म में उनकी व्यक्तिगत रुचि थी। हिंदू धर्म के अलावा, अकबर को शिया इस्लाम और ईसाई धर्म में भी रुचि थी। जहाँ वे विभिन्न धार्मिक नेताओं और प्रचारकों के साथ धार्मिक चर्चा करते थे। अकबर को कला का भी शौक था। उनके समय में वास्तुकला और पेंटिंग का विकास हुआ। अकबर ने अनेक भव्य भवनों का निर्माण करवाया। अकबर के समय में चित्रकला में भी प्रगति हुई। उनके दरबार के दो प्रसिद्ध चित्रकार थे जसवंत और दासवन। इस समय सुंदर भित्तिचित्र बनाए गए थे। पांडुलिपियों के किनारों को खींचने की कला भी विकसित हुई। पुर्तगाली पुजारियों ने अकबर के दरबार में यूरोपीय चित्रकला भी शुरू की। अकबर के समय के सबसे महान संगीतकार तानसेन थे जिन्होंने कई रागों की रचना की थी। अतः स्पष्ट है कि अकबर के समय में कला , संस्कृति एवं धर्म का विकास हुआ था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

फ़ज़ल, अबुल (*02* अप्रैल, *2005*). अकबर महान। मनोज प्रकाशन। पृष्ठ *100*. आईएसबीएन *3982*।

*"*साम्राज्य का विस्तार*"*। *26* जून *2010* को मूल से संग्रहीत। *23* सितंबर *2010* को एक्सेस किया गयज़ं

*"*अकबर महान*"*। भारतीय साहित्य संग्रह। *14* अगस्त *2010* को मूल (*PHP)* से संग्रहीत। *14* फरवरी *2009* को एक्सेस किया गया।

प्रसाद, ईश्वरी (*1960)*। द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ हुमायूँ। *14* मई *2015* को मूल से संग्रहीत *23* सितंबर *2010* को पुनःप्राप्त

*"*अकबर*"*। कोलंबिया विश्वकोश। *2006. 12* मई *2008* को मूल से संग्रहित। *30* मई *2008* को एक्सेस किया गया।

मौरिस एस। डिमांड (*1953)*। *"*मुगल चित्रकला और अकबर महान*"*। कला बुलेटिन का महानगर संग्रहालय। *12 (2) 4-51*। *13* मार्च *2017* को मूल से संग्रहीत। *23* सितंबर *2010* को एक्सेस किया गया।

ISSN-2230-7540

सुब्रह्मण्यम, संजय (*2005)*। मुग़ल और फ़्रैंक। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पृष्ठ *55.* आईएसबीएन *9780195668667*।

होयलैंड, जेएस*;* बनर्जी एसएन (*1949)*। फादर मोनसेराट की टिप्पणी, एसजेः ऑन जर्नी ऑन द जर्नी ऑफ द कोर्ट ऑफ अकबर, एशियन एजुकेशनल सर्विसेज। प्रकाशित किया है। पी। *58.* आईएसबीएन *94120408040*

घाघ *10:* वेकब मशीन में अकबर का जन्म *29* जून *2010* को हुआ। हुमायुनामा, कोलंबिया विश्वविद्यालय

श्रीवास्तव और आलम (*2006)* श्रीवास्तव, एएल एंड आलम, मुजफ्फर (*2007)*। भारत। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिया

अकबर की बारिश *24* नवंबर *2010* , इस्लामिक कला। (अंग्रेज़ी)

आलम, मुज़फ्फर*;* सुब्रह्मण्यम, संजय (*1949)*। मुगल राज्य, *1524-1450*। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पृष्ठ *14.* आईएसबीएन *9780195639056*।

Corresponding Author

Dr. Narendra Kumar Sharma*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

IGNITED MINDS Journals